18 -26 अप्रैल 2022 के दौरान वियतनाम नेशनल असेंबली के चेयरमैन द्वारा आयोजित रात्रि भोज के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

वियतनाम की नेशनल असेंबली के चेयरमैन, माननीय वुआंग दिन्ह हयु; गणमान्य सदस्यगण; देवियो और सज्जनो:

- आज यहाँ आप सभी के बीच आकर मैं और मेरे शिष्टमंडल के सदस्य बहुत सम्मानित महसूस कर रहे हैं। मैं अपनी और भारत की जनता की ओर से वियतनाम की जनता, संसद और सरकार का अभिवादन करता हूँ और शुभकामनाएं देता हूं।
- मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि इस वर्ष अर्थात 2022 में भारत-वियतनाम कूटनीतिक संबंधों के 50 वर्ष पूरे हो गए हैं। विगत 50 वर्षों के दौरान दोनों देशों के बीच परस्पर विश्वास और मजबूत मैत्रीपूर्ण संबंध आज एक साझेदारी में बदल गए हैं ।
- मैं इस शुभ अवसर पर आप सभी को बधाई देता हूं। सबसे पहले, मैं इस मनोरम देश में हमारा हार्दिक आदर -सत्कार करने के लिए आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूं। भारत और वियतनाम के बीच घनिष्ठ और सौहार्दपूर्ण संबंध रहे हैं। हमारी साझी सभ्यता और संस्कृति का एक लंबा इतिहास रहा है। हमें औपनिवेशिक शासन से आजादी प्राप्त करने के लिए समान रूप से संघर्ष करना पड़ा है।
- हमारे दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध निरंतर सुदृढ़ हो रहे हैं और वर्ष 2016 में हमारे प्रधान मंत्री जी के वियतनाम दौरे के दौरान हमारे द्विपक्षीय सम्बन्धों का दर्जा बढ़ाकर उन्हें *'व्यापक रणनीतिक भागीदारी'* में बदल दिया गया।
- **दिसंबर 2020 में पहली बार आयोजित भारत-वियतनाम वर्चुअल शिखर सम्मेलन के दौरान हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और प्रधानमंत्री श्री गुयेन जुआन फुक द्वारा 'शांति, संपन्नता और जनता' हेतु अपनाए गए ऐतिहासिक संयुक्त विजन से हमारे वर्तमान संबंधों को नई दिशा मिली है।**
- **वर्चुअल शिखर सम्मेलन के दौरान, दोनों देशों के विदेश मंत्रियों ने इस संयुक्त विजन को लागू करने के लिए 2021-23 की अवधि हेतु एक कार्य योजना पर भी हस्ताक्षर किए । इसके साथ, मैं कह सकता हूँ कि हमारे संबंध पहले से ही मैत्रीपूर्ण रहे हैं और समय के साथ और मजबूत हुए हैं।**

- भारत द्वारा 'लुक ईस्ट नीति' को महत्व दिए जाने तथा वियतनाम की इस क्षेत्र और भारत में बढ़ती भागीदारी से काफी लाभ हुआ है।

- भारत और वियतनाम ने संयुक्त राष्ट्र और विश्व व्यापार संगठन के अलावा आसियान, ईस्ट एशिया समिट, एशिया यूरोप मीटिंग (एएसईएम), आदि जैसे विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर निरंतर एक -दूसरे का साथ दिया है तथा एक-दूसरे के दृष्टिकोण पर भरोसा करने के अतिरिक्त साझा सरोकारों में एक दूसरे की मदद की है। हम हमेशा कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे हैं और एक-दूसरे की मदद के लिए हाथ बढ़ाया है।

- कोविड-19 वैश्विक महामारी के कठिन और चुनौतीपूर्ण समय में भी दोनों राष्ट्रों ने वर्चुअल माध्यम से द्विपक्षीय संपर्कों को बनाए रखा।

- भारत की वियतनाम के साथ विकास संबंधी दीर्घकालिक साझेदारी रही है जिसके तहत भारत ने वियतनाम को अपना क्षमता निर्माण करने, सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने और सामाजिक-आर्थिक विकास में सकारात्मक योगदान दिया है।

- मेकॉन्ग गंगा क्विक इंपैक्ट प्रोजेक्ट्स का विस्तार और विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) तथा ई-आईटीईसी कार्यक्रमों में सहयोग करके वियतनाम को विकास करने में भारत द्वारा सहायता प्रदान की जाएगी और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में भारत की पहुँच को और मजबूत किया जाएगा।

- मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम के तहत क्षमता विकास सहायता के तौर पर भारत ने पिछले कुछ वर्षों के दौरान लगभग 3000 वियतनामी प्रतिभागियों को भारतीय संस्थानों में अल्पकालिक पाठ्यक्रम के तहत प्रशिक्षण प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद हर साल वियतनामी अध्येताओं के लिए अलग से लगभग 50 अध्येतावृत्तियां प्रदान करती है।

- भारत सरकार द्वारा अक्तूबर 2019 में 23 आईआईटी के सहयोग से आसियान देशों के 1000 छात्रों के लिए पीएचडी फेलोशिप कार्यक्रम की शुरुआत की गई थी, जिसका लाभ वियतनाम के छात्र भी उठा रहे हैं।

- मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान हमारे द्विपक्षीय व्यापार में लगातार वृद्धि हुई है। वर्ष 2000 में भारत और वियतनाम के बीच द्विपक्षीय व्यापार केवल 200 मिलियन अमरीकी डालर मूल्य का जो वर्ष 2021 में 36% की वृद्धि के साथ 13.21 बिलियन अमरीकी डालर का हो गया जिसके चलते भारत वियतनाम का 8वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया है।

➢ वित्त वर्ष 2020-21 के दौरान वियतनाम भारत का विश्व स्तर पर 15वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार था और आसियान देशों में सिंगापुर, इंडोनेशिया और मलेशिया के बाद चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश था।

➢ वियतनाम में भारत का निवेश लगभग 1.9 बिलियन अमरीकी डालर होने का अनुमान है। इसके अतिरिक्त, वियतनाम में 313 भारतीय परियोजनाएं चल रही हैं जिनमें लगभग 910 मिलियन अमरीकी डालर का पूंजीगत निवेश किया गया है। इसके फलस्वरूप, वियतनाम में निवेश करने वाले देशों और क्षेत्रों में भारत 25वें स्थान पर है। हमारा निवेश ऊर्जा, खनिज अन्वेषण, कृषि उत्पाद -प्रसंस्करण, चीनी, चाय, कॉफी प्रसंकरण, कृषि-रसायन, आईटी और ऑटो कम्पोनेंट सहित विविध क्षेत्रों में है।

➢ मित्रो, सबसे प्राचीन सभ्यता के रूप में, भारत और इसकी सांस्कृतिक विरासत को विश्व भर में बहुत सम्मान और श्रद्धा के दृष्टि से देखा जाता है। विगत हजारों वर्षों से दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान के चलते आयुर्वेद जैसी भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति और वियतनाम की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में काफी समानता है।

➢ दोनों देशों में योग, शांति और सामंजस्य तथा आध्यात्मिक उन्नति और जीवन में खुशहाली लाने के साझे प्रयासों का प्रतीक है। दोनों देश पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को बेहतर बनाने हेतु कार्य कर रहे हैं साक्ष्यों के आधार पर और जन कल्याण के लिए इसे सामान्य चिकित्सा पद्धति में शामिल करने के पक्षधर हैं। हमारी बौद्ध और चाम संस्कृतियों, परंपराओं और प्राचीन ग्रंथों सहित साझी सांस्कृतिक और सभ्यतागत विरासत है। विरासत के संरक्षण में सहयोग वियतनाम के साथ भारत की विकास संबंधी साझेदारी का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जो दोनों देशों के बीच गहन सभ्यतागत संबंध को भी दर्शाता है।

➢ दोनों देशों की जनता के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध वास्तव में हमारे संबंधों का आधार है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि दोनों देशों ने सीधी उड़ानों की संख्या को बढ़ाकर, वीजा जारी करने की प्रक्रिया को सरल बनाकर और पर्यटन को प्रोत्साहन देकर तथा यात्रा करना सुगम बनाकर बनाकर दोनों देशों के लोगों के बीच परस्पर संपर्कों को बढ़ावा देने के प्रयास तेज कर दिए हैं।

➢ **हमें आपसी संबंधों को और मजबूत करने के लिए संसदीय शिष्टमंडलों के दौरों; सामाजिक संगठनों, मैत्री समूहों एवं युवा संगठनों को प्रोत्साहित करना चाहिए और इनकी संख्या भी बढ़ानी चाहिए। इसी प्रकार, शैक्षिक और शैक्षणिक संस्थाओं के बीच सहयोग; थिंक टैंकों के बीच विचार-विमर्श; संयुक्त**

शोध कार्यक्रम; शैक्षिक छात्रवृत्तियों; और मीडिया, फिल्म, टीवी शो तथा खेलकूद के क्षेत्रों में आदान-प्रदान को भी बढ़ाया जाना चाहिए।

➢ भारत और वियतनाम के बीच सदियों पुराने सांस्कृतिक और सभ्यतागत संबंध रहे हैं और दोनों देशों के लोग एक दूसरे के देश में आया जाया करते थे। प्राचीन काल से व्यापारियों, कलाकारों और भिक्षुओं ने कला, वास्तुकला और ज्ञान विधा तथा दर्शन, आदि के माध्यम से अपने देश में भारतीय सभ्यता का प्रचार-प्रसार किया। हनोई स्थित स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के माध्यम से वियतनाम के साथ हमारे संबंध और अधिक प्रगाढ़ हुए, जिसकी स्थापना सितम्बर, 2016 में भारत के संबंध में जानकारी प्रदान करने और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से दोनों राष्ट्रों की जनता के बीच घनिष्ठ संबंधों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। यह केंद्र योग, भारतीय शास्त्रीय नृत्य, कला और दर्शन, हिंदी तथा संस्कृत भाषा, पारंपरिक औषधि जैसे विविध क्षेत्रों के संबंध में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, विचारष्ठियों, फोटो प्रदर्शनी, फिल्म स्क्रीनिंग, व्याख्यान और कार्यशालाओं का आयोजन करके भारत और वियतनाम के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देता है।

➢ वियतनाम में भारतीय समुदाय के लोगों की संख्या काफी कम है, लेकिन वे काफी सक्रिय हैं, इनमे से अधिकांश लोग पेशेवर और व्यवसायी हैं। दोनों देशों की सांसदों के शिष्टमंडलों के दौरों से हमारा मार्गदर्शन होता है और कार्यपालिका को बेहतर नीतियाँ तैयार करने में सहायता मिलती है। हमारे शिष्टमंडल का हार्दिक स्वागत करने के लिए मैं एक बार फिर आपको धन्यवाद देता हूं। हम यहाँ से बहुत सी सुखद यादें लेकर वापस जाएंगे।

➢ इन शब्दों के साथ, मैं यहां उपस्थित सभी विशिष्टजनों से हमारे दोनों देशों और उसकी जनता की समृद्धि और कल्याण की दिशा में कार्य करने तथा भारत और वियतनाम की वर्षों पुरानी मित्रता को और प्रगाढ़ बनाने का अनुरोध करता हूं।

➢ धन्यवाद।